ISBN : 978-93-82597-94-0

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

2-3 नवम्बर, 2017

4

भक्तिकालीन कविता भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

हरीश अरोड़ा
संयोजक एवं सम्पादक

रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सौजन्य : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

भक्तिकालीन कविता
भारतीय संस्कृति के विविध आयाम
भाग-4

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी
2-3 नवम्बर, 2017

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

संरक्षक
डॉ. रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

सम्पादक
डॉ. हरीश अरोड़ा
संयोजक, अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

साहित्य संचय
ISO 9001:2015
मोबाइल : 9871418244, 9136175560
ISBN No. 978-93-82597-94-0

21. जायसी का पद्मावत : प्रेम घाव दुख जान कोई 81
आलोक कुमार पाण्डेय
22. भक्तिकालीन कृष्ण काव्य परम्परा : एक दृष्टिपात 84
अनिलाबेन वी. झाला
23. कबीर और बुल्लेशाह के काव्य में विद्रोह 87
बलबीर सिंह
24. सूफी काव्य : उदारवादी दृष्टिकोण 90
भावना
25. भक्तिकाल की दो धाराएँ 93
बिनाबेन जे जोशी
26. भक्तिकाव्य : मूल्य और प्रासंगिकता 95
बिपिनभाई एम पटेल
27. संत काव्य : आध्यात्मिकत अनुभूति का काव्य 98
चंद्रकांत सिंह
28. भक्ति काव्य और लोकजीवन 101
चारू चौहान
29. तुलसी के रामचरितमानस में वर्णित पारिवारिक मूल्यों की आधुनिक संदर्भों में व्याख्या 104
कल्पना पाडें
30. लोकमंगल की भावना और भक्त कवि तुलसीदास 107
कनुभाई एच वाला
31. सामाजिक एकीकरण का भाव और निर्गुण संत काव्य 109
किरण त्रिपाठी
32. मध्यकालीन मुस्लिम कृष्णभक्त कवि 113
किशन पी. वाला
33. भक्ति आन्दोलन और भक्त कवियों की साधना 117
पटेल लीलावंती बेन आर
34. सूफी प्रेमाख्यानक काव्य 122
निवेदिता सिंह
35. मीरा के काव्य में विद्रोह का स्वर 127
प्रकाश चंद बैरवा
36. संत कबीर : आध्यात्मिक चेतना का विराट बोध 130
प्रिया कौशिक
37. संत साहित्य का सांस्कृतिक योगदान 133
राकेश पाण्डेय
38. मीरा : भक्ति और शक्ति का समन्वय 137
रंजना सिंह
39. सामाजिक समरसता की चेतना और भक्तिकाव्य 140
रवि कुमार
40. मध्यकालीन परिवेश में तुलसी की समन्वय भावना 143
ऋषिकेश सिंह
41. भक्ति आन्दोलन और कबीर 147
साधना रावत
42. भक्ति आन्दोलन के उदय से जुड़े तथ्य 150
संजय बी. आसोदरिया
43. जायसी की रचनाधर्मिता और भारतीय संस्कृति 153
सुनील कुमार यादव

संत काव्य : आध्यात्मिक अनुभूति का काव्य

चंद्रकांत सिंह
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला

संत काव्य धारा हिंदी काव्य क्षेत्र में विशेष महत्व रखती हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संत काव्य धारा को ज्ञानाश्रयी शाखा के तौर पर अभिहित किया हैं। इस काव्यधारा ने न केवल साहित्यिक क्षेत्र में अपना योगदान दिया अपितु सामाजिक एवं वैचारिक स्तर पर भी बदलाव लाने का कार्य कियां। संत कवियों ने जहाँ एक ओर लौकिक जगत को कविता में उतारा वहीं पारलौकिक जगत की अभिव्यक्ति भी उनकी कविता में साफ तौर पर देखी जा सकती हैं। संत काव्यधारा को अनुभव की धारा कह सकते हैं यहाँ अभिव्यक्त अनुभव चाहे वह सांसारिक स्तर पर हो या आध्यात्मिक बेलाग और सशक्त हैं। अध्यात्म की बारीकियाँ कई बार अमूर्त लग सकती हैं क्योंकि अध्यात्म की कोई बनी बनाई पगडंडी नहीं होती लेकिन उनमें अनुभव की सांद्रता है जो उसे छीजने से बचाता हैं। संतों की कविता ने आध्यात्मिक आकाश की ऊँचाइयों को छुआ है यही वजह है कि कविता में जगत की निस्सारता का अनुभव है और गैबी प्रकाश की अनंत छटाएँ हैं जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकतीं।

संत काव्य धारा का अवगाहन करने पर पता चलता है कि काव्य धारा के अधिकांश कवि पूर्णता अशिक्षित हैं। उन्होंने कहीं से विधिवत शिक्षा ग्रहण नहीं की बावजूद इसके उनकी कविताओं में आध्यात्मिक प्रकाश की झलक हैं। साहित्यिक तौर पर यदि इन कविताओं का विश्लेषण करें तो यह साफ तौर पर दिखता है कि कविताएं किसी भी स्तर पर कमजोर या अशक्त नहीं हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह है कवियों के हृदय की विराटता एवं संवेदना का अजस्र पारावार जिससे होकर कविता का जन्म हुआ है। भले ही संत कवियों ने कविता लिखने के उद्देश्य से कविता न की हो लेकिन उनकी कविताओं में गहरी समझ है,उनकी कविताओं जीवन को सीधे तौर पर देखने की विहंगम दृष्टि हैं।

संतों की कविता में गुरु का विशेष स्थान है, गुरु के बगैर संतों की कविता अकल्पनीय हैं। आमतौर पर संसार में लोग मनमुख होकर जीते हैं। मन के ऊपरी स्तर पर जीते हुए देखते-देखते पूरी जिंदगी निकल जाती है और पता नहीं चलतां। संतों की कविता मनमुखी नहीं गुरुमुखी हैं। यहाँ चेतना का दोतरफा तीर दिखाई पड़ता हैं। एक ओर भक्त की दृष्टि जहाँ खुद की तरफ है वहीं गुरु के जरिए भक्त अपने हृदय में परमात्मा का साक्षात्कार करता हैं। इस तरह गुरु केवल ज्ञान भर नहीं देता बल्कि गुरु सीधे तौर पर परमात्मा से भक्तों को मिलाता है, यही वजह है कि संतों की कविता में गुरु के प्रति अहोभाव हैं। आध्यात्मिक जगत की विराट यात्रा करने के लिए गुरु न केवल उपयोगी है बल्कि गुरु ही वह खेवनहार है जिससे जीवन को सही जीवन एवं अर्थवत्ता प्राप्त होती हैं। गुरु के संदर्भ में बताते हुए गुरु नानक देव कहते हैं कि ख़

भरमे भाह न विझवै जे भवै दिसंतर देसं.द्य
अंतर मैल न उतरै धिग्र जीवण धिग्र वेसं.द्य
होर कितै भगति न होवई बिन सतगुरू के उपदेसं.द्य
मन रे गुरुमुख अगन निवारं।द्य
गुरु का कहिया मन वसै हउमै त्रिसना मारं।द्य

गुरु नानक देव अन्यत्र कहते हैं कि गुरु के बगैर कोई मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकतां। गुरु ही मुक्तिदाता है,इस संसाररूपी अंधी जकड़बंदी से गुरु ही बचाता है ख़

बिन सतगुरु किनै न पाइयो बिन सतगुर किनै न पाइआ
सतगुर विच आप राखिओन कर प्रगट आख सुणाइआ।।द्य
सतगुर मिलिऐ सदा मुकत है जिन विचहो मोह चुकाइआं।द्य
उतम एह बीचार है जिन सचे सिउ चित्त लाइआं।द्य

संत काव्य धारा पर उपनिषदों का,नाथों-सिद्धों का, इस्लाम का विशेष प्रभाव है जिसकी वजह से संत काव्य धारा अध्यात्म के शिखर तक पहुंचती हैं। संतों की इस कविता में केवल दार्शनिक अंदाज भर नहीं है बल्कि भक्ति और ज्ञान का अद्‌भुत समागम भी हैं। अध्यात्म की ऊंचाई के लिए ज्ञान और भक्ति विशेष जरुरी हैं,यही वे दो रास्ते हैं जिनसे होते हुए साधक अपने अंतरतम में होश की पूरी यात्रा तय करता हैं। संत काव्य को आध्यात्मिक गंगा कह सकते हैं जिसके कई पड़ाव हैं मसलन